मइया के गीत

नीमिया के डाढ़ी मइया लावेली हिंडोलवा, कि झूली रे झूलि ना,
मइया गावेली गीतिया कि झूलि रे झूलि ना।
झूलत-झूलत मइया के लगली पियसिया, कि चलि रे भइली ना,
मलहोरिया के घरवा कि चलि रे भइली ना।
सूतल बाड़ू कि जागल मलनिया हो कि एक बून रे ना,
मोहि के पनिया पिआव कि एक बून रे ना।
कइसे के पनिया पियाईं सीतल मइया, कि मोरा गोदे ना,
बाड़े बलका तोहार कि मोरा गोदे ना।
बालका सुताव मालिन सोने के टोलवा कि एक बून ना,
मोहि के पनिया पिआव, कि एक रे बून ना।
एक हाथे लिहली मालिन झँझरे झड़ुअवा हो, दूसरे हाथे ना,
सीतल जूड़ पनिया कि दूसरे हाथे ना।
पनिया त पिअलू मइया पाटे चढ़ि बइठ हो, कि कर मइया ना,
एह नगरिआ के रच्छा कि कर मइया ना।

अभ्यास

1. 'नीम के पेड़' के महत्त्व के बारे में अपना शिक्षक से जानकारी लीं।
2. कवनो दोसर मइया के गीत याद करीं।
3. सीतल मइया के पूजा कब कइल जाला, पता करीं।

शब्द-भंडार

डाढ़ी	–	डाल
हिंडोलवा	–	झूला
पियसिया	–	प्यास
मोहि	–	हमरा के
बून	–	बूँद
रच्छा	–	रक्षा

छठ के गीत

(1)

कोपि–कोपि,

बोलेली छठी मईया,
सुनीं! ए महादेव।
सुनीं! ए महादेव।।

मोरा घाटे,

दुभिया लहसि गइले,
मकड़ी बसेड़ कइले।
मकड़ी बसेड़ कइले।।

हँसी–हँसी,

बोलिले महादेव,
सुनीं! ए छठी मइया।
सुनीं! ए छठी मइया।।

रउरा घाटे,

दुभिया छिलाई देबो।
मकड़ी बहारी देबो।
चन्दन लिपाई देबो।
दुधवे अरघ देबो।

(2)

ऊ जे काँच हीं बाँस के बहँगिया,
बहँगी लचकत जाय-बहँगी लचकत जाय।

ऊ जे बाट हीं पूछेला बटोहिया,
बहँगी केकरा हीं जाय-बहँगी केकरा हीं जाय।

तू तऽ आन्हर हऊऽ ए बटोहिया,
बहँगी छठी माई के जाय-बेहँगी छठी माई के जाय।

ऊ जे केरवा जे फरेला घवद से,
ओपर सुगा मेड़राय-ओपर सुगा मेड़राय।

ऊ जे सुगवा के मारबो धनुष से,
सुगा गिरीहें मुरूछाय-सुगा गिरीहें मुरूछाय।

ऊ जे सुगनी जे रोवेली बियोग से,
आदित्य होीं न सहाय-आदित्य होीं न सहाय।

अभ्यास

1. पाठ्य-पुस्तक में दिहल छठ के दूनू गीतन के सामूहिक रूप से गावे के प्रयास करीं।
2. अपना 'ईया', चाहे 'माई' से छठ के कवनो दोसर गीत सुन के कॉपी में लिखीं आउर इयाद करीं।
3. अपना मित्र भा सहेली के पत्र लिख के 'छठ' के विधि-विधान के विषय में बताईं।
4. 'छठ-पर्व' कवन देवता से जुड़ल बा?
5. 'छठ-पर्व' के कवनो शास्त्रीय आधार बा आ कि ई लोक मान्यता के पर्व हऽ?
6. 'छठ-पर्व' लोक आस्था के पर्व हऽ, एहसे एहमें हर वर्ग आ जाति के लोग मन से शामिल होला। लोक आस्था से जुड़ल भोजपुरी समाज में प्रचलित आउरो दोसर व्रत-त्योहारन पर अपना शिक्षक से जानकारी प्राप्त करीं।
7. 'छठ-पर्व' के व्रती लोग कवनो कथा बइठके ना सुनेलें, एमें गाली गीत गावल जाला-एहसे का प्रकट होत बा? अपना शिक्षक से समझीं।